राजेश कुमार सुंदरका सीतामढ़ी, बिहार

आपका मार्च-अप्रैल अंक देखा। सभी लेख पसंद आए। आतंकवाद के खिलाफ दोनों देशों का साथ-साथ आना भी आजकल की ज्वलंत चुनौतियों के अनुरूप है। आतंकवाद मिटाने के लिए सभी को विश्वास में लेते हुए निष्पक्ष तरीके से काम करना होगा। ''जीवंत हुई वह तीर्थयात्रा'' ने भारत और अमेरिका पर एक-दूसरे की गहरी छाप को फिर से ताज़ा कर दिया। आवरण ''अपने हाथों पृथ्वी की रक्षा'' आज की मुख्य चुनौती को प्रतिबिंबित करता है।

अनिल सिंह चंडीगढ़

स्पैन के मार्च-अप्रैल अंक में ''आतंकवाद से मुकाबले में साथ-साथ'' लेख पढ़ा। आतंकवाद आज पूरी दुनिया को अपनी गिरफ़्त में ले रहा है। इससे निपटने के लिए दुनिया के सभी शांतिप्रिय देशों को एकसाथ आना होगा। ऐसे में भारत और अमेरिका का मिलकर काम करना निश्चय ही प्रशंसनीय है। दोनों ही देश दुनिया के अग्रणी लोकतांत्रिक देश हैं और उन्हें दुनिया से आतंकवाद के खत्मे के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

सिद्धार्थ चतुर्वेदी

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

यह देखना वाकई अद्भुत था कि आपकी प्रतिष्ठित पत्रिका का एक महत्वपूर्ण भाग महिलाओं पर केंद्रित था। मैंने स्पैन के मार्च-अप्रैल 2009 के अंक की प्रति जैसे ही देखी और साहित्य, कला तथा विज्ञान के क्षेत्र में उनके महान योगदान के बारे में सूचनापरक लेख देखे, तो मुझे इस बात की खुशी हुई कि महिलाओं के द्वारा किए गए प्रशंसनीय कार्य बिना सराहे नहीं रहे हैं। मैं हमेशा इस तथ्य को जानता था और पत्रिका ने इस बात को साबित किया है कि मेरी राय गलत नहीं थी। मेरा सुझाव है कि पत्रिका में इस तरह की सामग्री और ज़्यादा प्रकाशित करें जिससे समाज में महिलाओं की सही स्थिति के बारे में जागरूकता का प्रसार हो।

कपिल शर्मा इंदौर

अमेरिका में पर्यावरण संरक्षण की चुनौतियों के बारे में जागरूकता के लिए पृथ्वी दिवस किन-किन तरीकों से मनाया जाता है, इस बारे में स्पैन के मार्च-अप्रैल अंक में पढ़ा। पर्यावरणीय चुनौती से निपटना आज बहुद ज़रूरी हो गया है लेकिन यह यह जानकर अच्छा लगा कि अमेरिका में पृथ्वी दिवस मनाने की शुरुआत 1970 में ही हो गई थी। यदि पूरी दुनिया पर्यावरण की चुनौतियों से उसी समय गंभीरता से निपटने के प्रयास करती तो हम अब तक बहुत आगे बढ़ चुके होते। विश्व में तापमान वृद्धि के बारे में अमेरिकी नीतियों के बारे में भी जानकारी मिली और यह जानकर खुशी हुई कि अमेरिकी दूतावास ऊर्जा बचाने के लिए भारत में सक्रियता से कदम उठाता है।

रेखा कुमारी श्रृंगेरी, कर्नाटक

पहली बार स्पैन का मार्च-अप्रैल 2009 का अंक देखकर खुशी हुई। आवरण कथा और अन्य लेख बहुत ही बढ़िया थे। ''इसीलिए वे इसे ब्लूज़ कहते हैं'' बहुत ही अच्छा और मन को छू लेने वाला लेख था। फ़्लावर्स ने बहुत ही खूबसूरत तरीके से अफ़्रीकी और दक्षिण अमेरिकी लोककथाओं और ब्लूज़ संगीत के बारे में बताया है। मुझे ''विश्व में महिलाओं के योगदान का उत्सव'' और ''महिला वैज्ञानिक: पहचान के लिए संघर्ष'' लेख वाकई पसंद आए। एक अध्यापक के तौर पर मैं कह सकता हूं कि पर्यावरण और महिला वैज्ञानिकों के इतिहास के बारे में यह अंक ज्ञान का समृद्ध स्रोत है। मुझे ''कोई महिला अव्वल अमेरिकी उपन्यास क्यों नहीं लिख सकती?'' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक समीक्षा भी अच्छी लगी। समाज में महिलाओं के अधिकारों और स्थान के बारे में सोचने के लिए इसने मेरे लिए नए द्वार खोले हैं।

सुशील किशोर श्रीवास्तव बलिया, उत्तर प्रदेश

मार्च-अप्रैल अंक का आवरण '' 'अपने हाथों पृथ्वी की रक्षा'' इस बात को इंगित करता है कि विश्व में ग्लोबल वार्मिंग के चलते पर्यावरण असंतुलन की समस्या उत्पन्न हो रही है। इससे मानव और वनस्पति जगत का अस्तित्व ही संकट में पड़ने लगा है। इसे सुरक्षित और संरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी हमारे अपने ही हाथों में है।